पहाड़, जिसे एक चिड़िया से प्यार हुआ

लेखक **एलिस मकलेरन** चित्रकार **स्टीफन एट्कन**

अनुवाद **अरविन्द गुप्ता**

पहाड़, जिसे एक चिड़िया से प्यार हुआ

लेखक एलिस मकलेरन
चित्रकार स्टीफन एट्कन

अनुवाद अरविन्द गुप्ता

Other picture books from Tulika

All About Nothing
Kali and the Rat Snake
A Face in the Water
The Why-Why Girl
Who will be Ningthou?

Pahaad, jise ek chidiya se pyaar hua (Hindi)
Translated from the English
ISBN 81-8146-077-4

First published in India 2006

Published by
Tulika Publishers, 13 Prithvi Avenue, Abhiramapuram, Chennai 600 018, India
email tulikabooks@vsnl.com *website* www.tulikabooks.com

Printed and bound by
Rathna Offset Printers, 40 Peters Road, Royapettah, Chennai 600 014, India

For Larry
A. M.

S. A.
TO SWAMI SHYAM, MY JOY

बहुत पुरानी बात है। किसी रेगिस्तानी इलाके में एक पहाड़ था, एकदम पथरीला। उसके ढलान पर घास का एक तिनका तक नहीं उगता था, न ही कोई जानवर, पक्षी या कीड़ा-मकौड़ा वहां रहता था।

सूरज की गर्मी में पहाड़ तपता था और ठंडी हवा के झोंकों से ठिठुरता था। वो केवल बारिश की बूंदें और सर्दियों की बर्फ़ ही छूत पाता था। वहां और कुछ महसूस करने को था ही नहीं।

पहाड़ दिन-रात टकटकी लगाये आसमान में आते-जाते बादलों को घूरता रहता था। उसको दिन में सूर्य और रात को चंद्रमा का पथ पक्की तरह रट गया था। वह अक्सर रात को दूर-दराज स्थित अनगिनत तारों को उदय और अस्त होते देखता था।

उस वीरान रेगिस्तान में देखने के लिये और कुछ था ही नहीं।
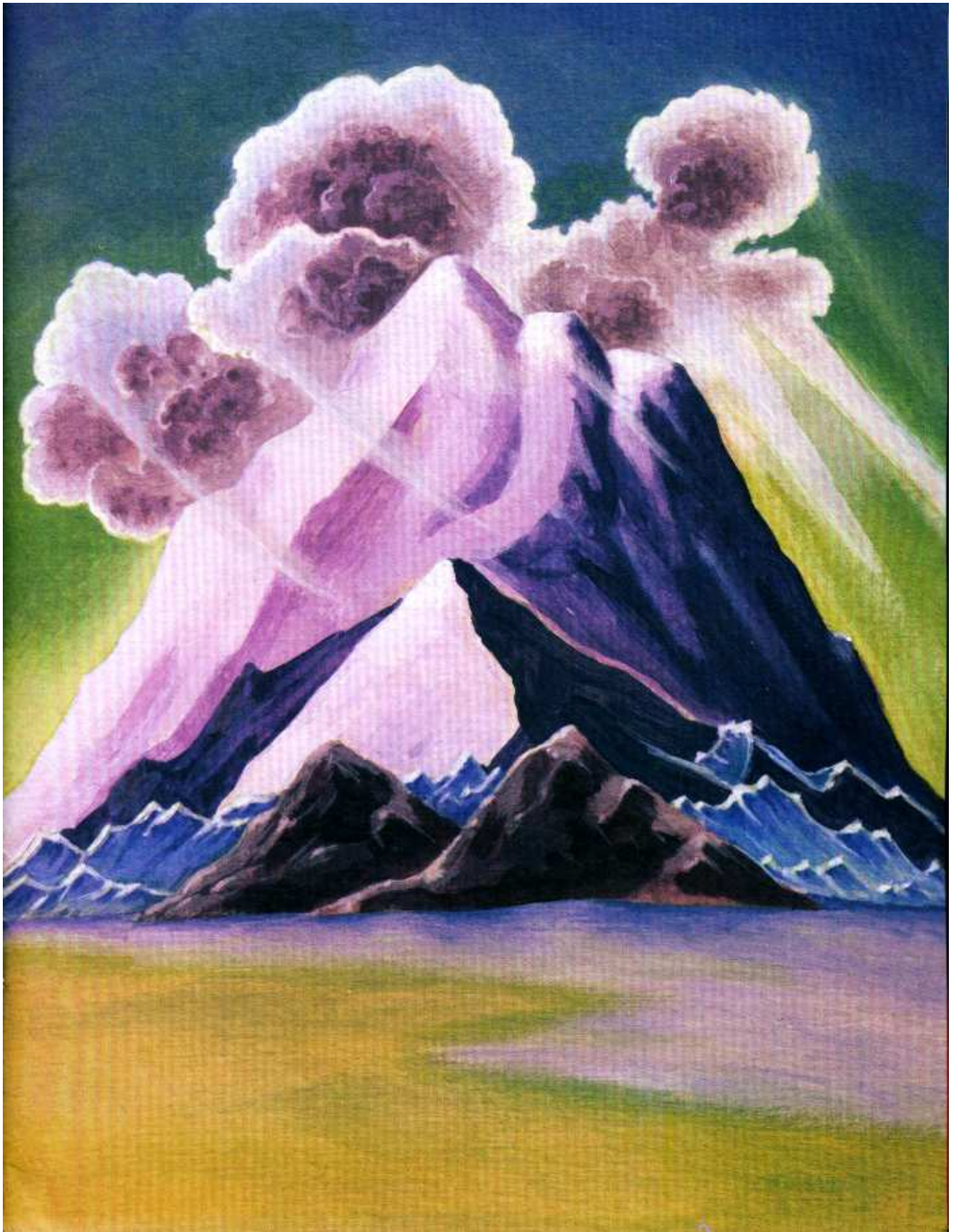
लेकिन एक दिन पहाड़ पर एक नन्ही चिड़िया आयी। कुछ देर तक उसने पहाड़ के ऊपर चक्कर काटा, फिर सुस्ताने और अपने पंखों को संवारने के लिये उस पर रुकी। पहाड़ को उसके पंजों के स्पर्श का अहसास हुआ। जब चिड़िया ने अपने पंखों को एक चट्टान से रगड़ा तो पहाड़ ने उसके रोयेंदार पंखों की कोमलता को महसूस किया। पहाड़ चकरा गया क्योंकि आज तक आसमान से ऐसी कुछ भी चीज उसके पास नहीं आयी थी।

"कौन हो तुम?" पहाड़ ने पूछा। "तुम्हारा नाम क्या है?"
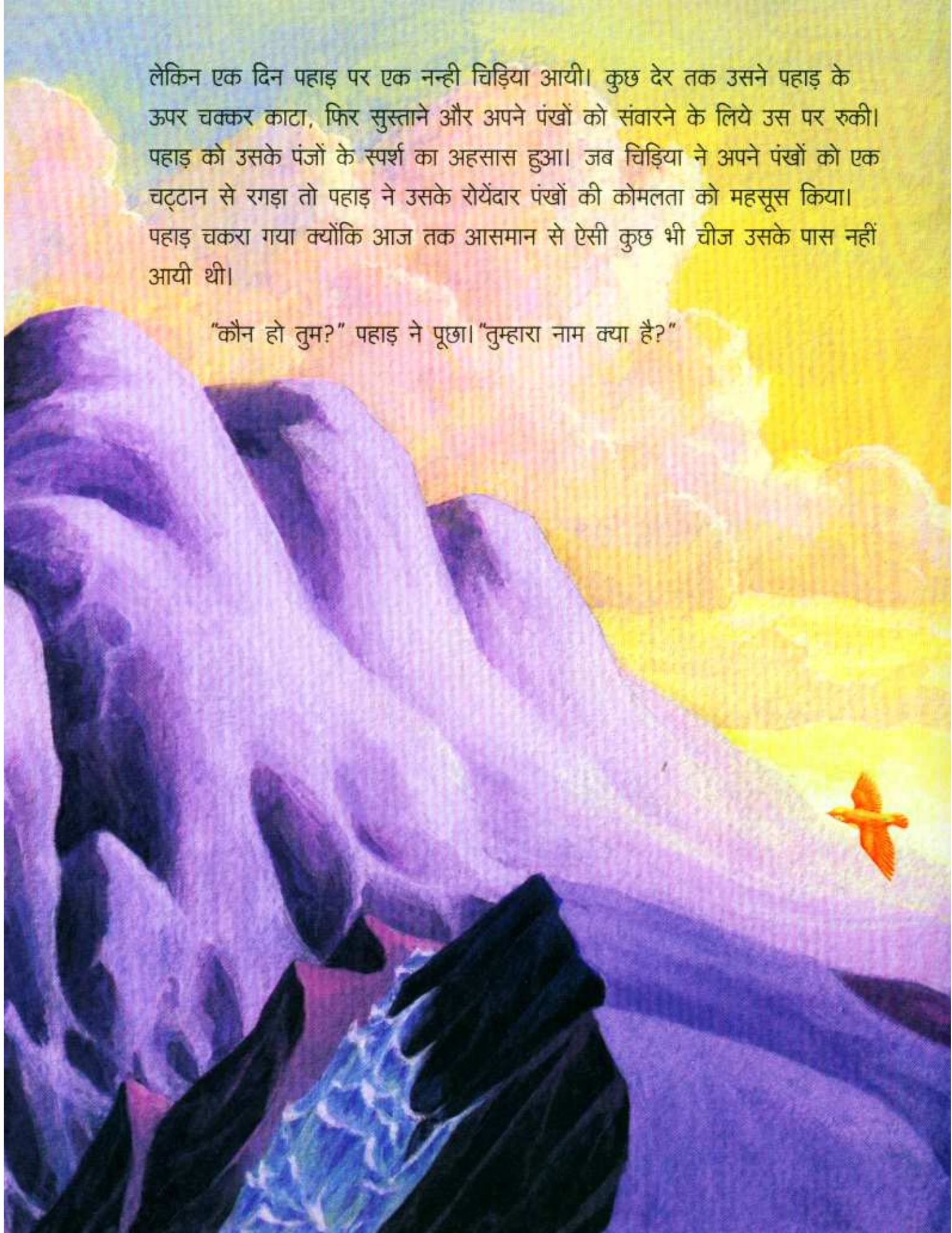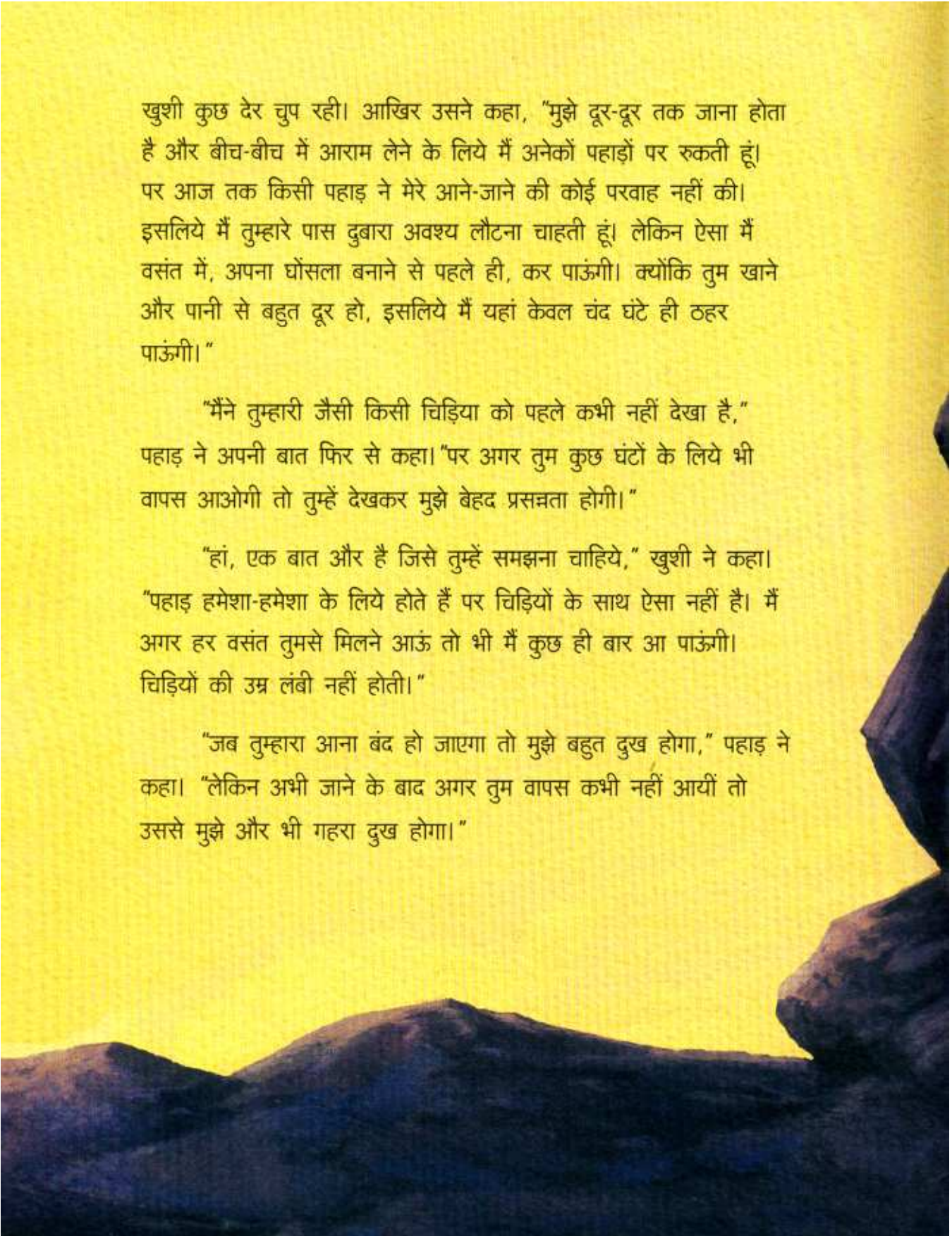
"मैं चिड़िया हूं," चिड़िया ने उत्तर दिया। "मेरा नाम खुशी है। मैं दूर देश से आयी हूं जहां चारों ओर हरियाली है। हर वसंत के मौसम में मैं हवा में उंची उड़ाने भरती हूं। मैं अपना घोंसला बनाने, अंडे सेने और बच्चों को बड़ा करने के लिये एक उपयुक्त स्थान चुनती हूं। यहां कुछ देर सुस्ताने के बाद मुझे अपनी खोज पर दुबारा निकलना होगा।"

"मैंने तुम्हारे जैसी किसी चिड़िया को पहले कभी नहीं देखा है," पहाड़ ने कहा। "क्या तुम्हारा यहां से जाना बिलकुल जरूरी है? क्या तुम यहां पर रह नहीं सकती हो?"

खुशी ने सिर हिलाया। "चिड़िये जिंदा जीव होती हैं,'" उसने समझाया। "उन्हें जिंदा रहने के लिये भोजन और पानी चाहिये होता है। यहां पर खाने के लिये कुछ भी नहीं उगा है। न ही यहां कोई झरना है जिससे मैं पानी पी सकूं।"

"अगर तुम यहां रुक नहीं सकती तो और किसी दिन वापस तो आओगी?" पहाड़ ने पूछा।

खुशी कुछ देर चुप रही। आखिर उसने कहा, "मुझे दूर-दूर तक जाना होता है और बीच-बीच में आराम लेने के लिये मैं अनेकों पहाड़ों पर रुकती हूं। पर आज तक किसी पहाड़ ने मेरे आने-जाने की कोई परवाह नहीं की। इसलिये मैं तुम्हारे पास दुबारा अवश्य लौटना चाहती हूं। लेकिन ऐसा मैं वसंत में, अपना घोंसला बनाने से पहले ही, कर पाऊंगी। क्योंकि तुम खाने और पानी से बहुत दूर हो, इसलिये मैं यहां केवल चंद घंटे ही ठहर पाऊंगी।"
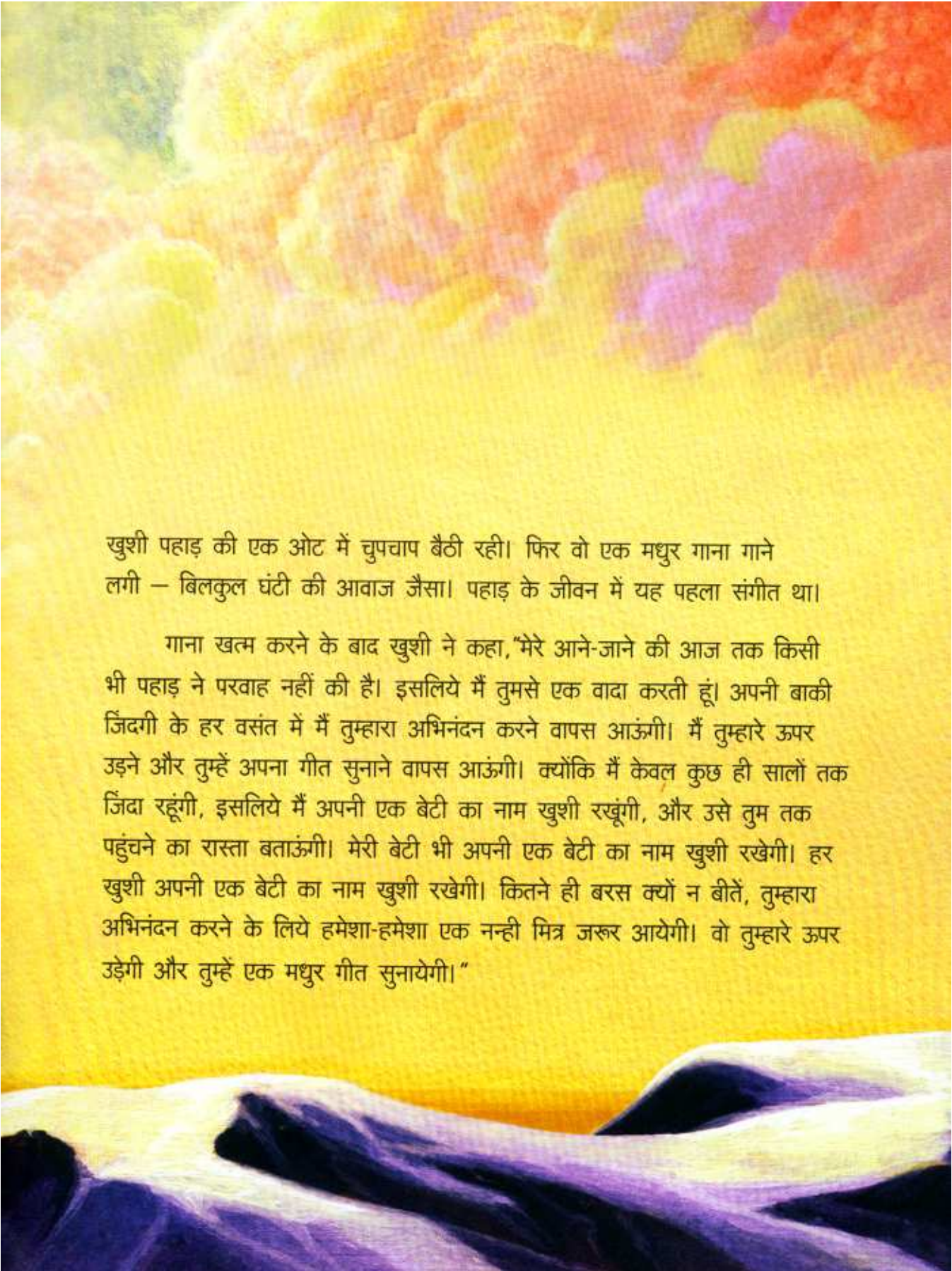
"मैंने तुम्हारी जैसी किसी चिड़िया को पहले कभी नहीं देखा है," पहाड़ ने अपनी बात फिर से कहा। "पर अगर तुम कुछ घंटों के लिये भी वापस आओगी तो तुम्हें देखकर मुझे बेहद प्रसन्नता होगी।"

"हां, एक बात और है जिसे तुम्हें समझना चाहिये," खुशी ने कहा। "पहाड़ हमेशा-हमेशा के लिये होते हैं पर चिड़ियों के साथ ऐसा नहीं है। मैं अगर हर वसंत तुमसे मिलने आऊं तो भी मैं कुछ ही बार आ पाऊंगी। चिड़ियों की उम्र लंबी नहीं होती।"

"जब तुम्हारा आना बंद हो जाएगा तो मुझे बहुत दुख होगा," पहाड़ ने कहा। "लेकिन अभी जाने के बाद अगर तुम वापस कभी नहीं आयीं तो उससे मुझे और भी गहरा दुख होगा।"
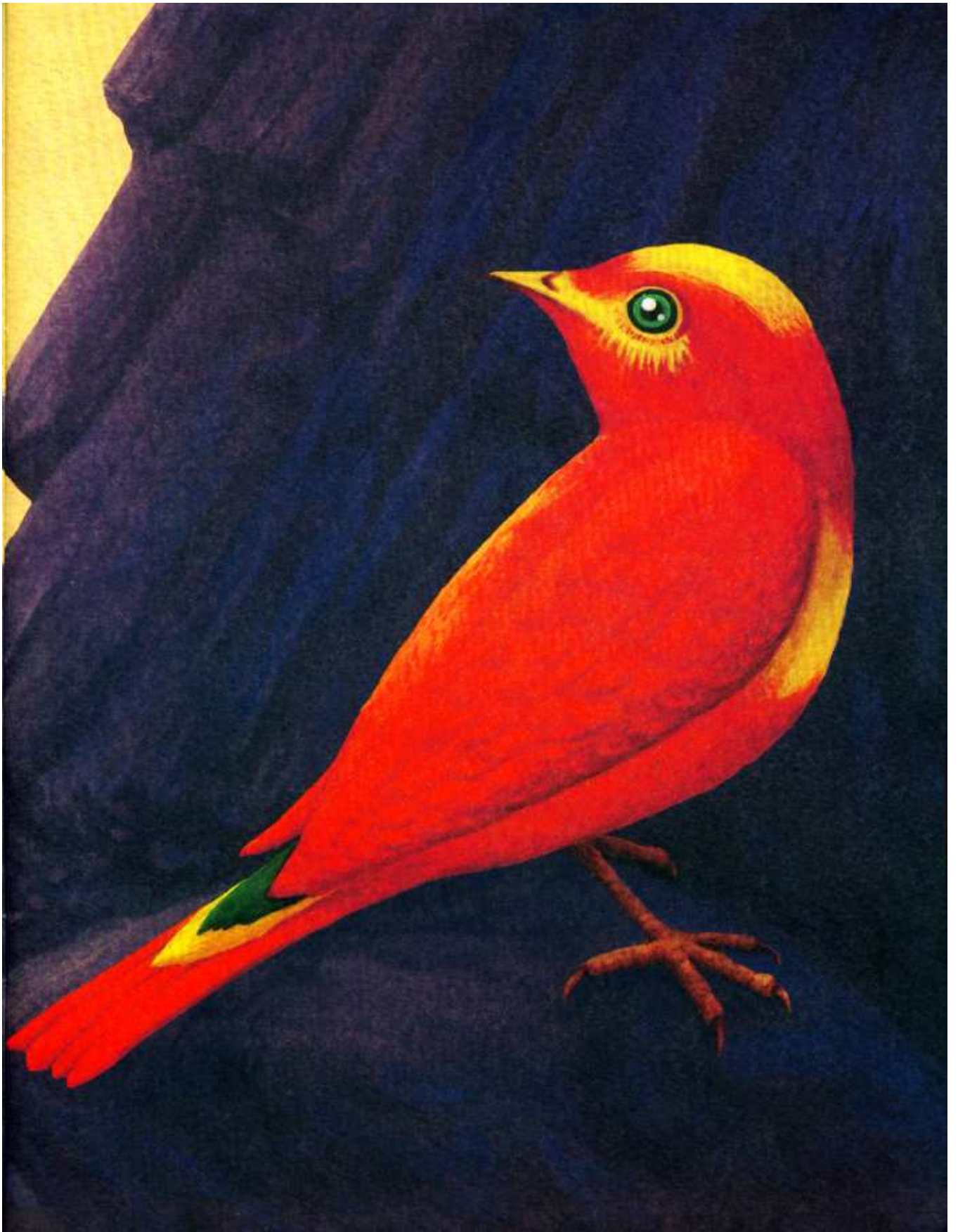
खुशी पहाड़ की एक ओट में चुपचाप बैठी रही। फिर वो एक मधुर गाना गाने लगी – बिलकुल घंटी की आवाज जैसा। पहाड़ के जीवन में यह पहला संगीत था।

गाना खत्म करने के बाद खुशी ने कहा, "मेरे आने-जाने की आज तक किसी भी पहाड़ ने परवाह नहीं की है। इसलिये मैं तुमसे एक वादा करती हूं। अपनी बाकी जिंदगी के हर वसंत में मैं तुम्हारा अभिनंदन करने वापस आऊंगी। मैं तुम्हारे ऊपर उड़ने और तुम्हें अपना गीत सुनाने वापस आऊंगी। क्योंकि मैं केवल कुछ ही सालों तक जिंदा रहूंगी, इसलिये मैं अपनी एक बेटी का नाम खुशी रखूंगी, और उसे तुम तक पहुंचने का रास्ता बताऊंगी। मेरी बेटी भी अपनी एक बेटी का नाम खुशी रखेगी। हर खुशी अपनी एक बेटी का नाम खुशी रखेगी। कितने ही बरस क्यों न बीतें, तुम्हारा अभिनंदन करने के लिये हमेशा-हमेशा एक नन्ही मित्र जरूर आयेगी। वो तुम्हारे ऊपर उड़ेगी और तुम्हें एक मधुर गीत सुनायेगी।"

"काश, तुम यहां हमेशा के लिये रह पाती," पहाड़ ने कहा, "पर मैं इस बात पर खुश हूं कि तुम वापस आओगी।"

"अब मुझे जाना है," खुशी ने कहा, "क्योंकि जहां मुझे खाना और पानी मिलेगा, वो जगह यहां से बहुत दूर है। अच्छा, तो अगले साल तक के लिये अलविदा।"
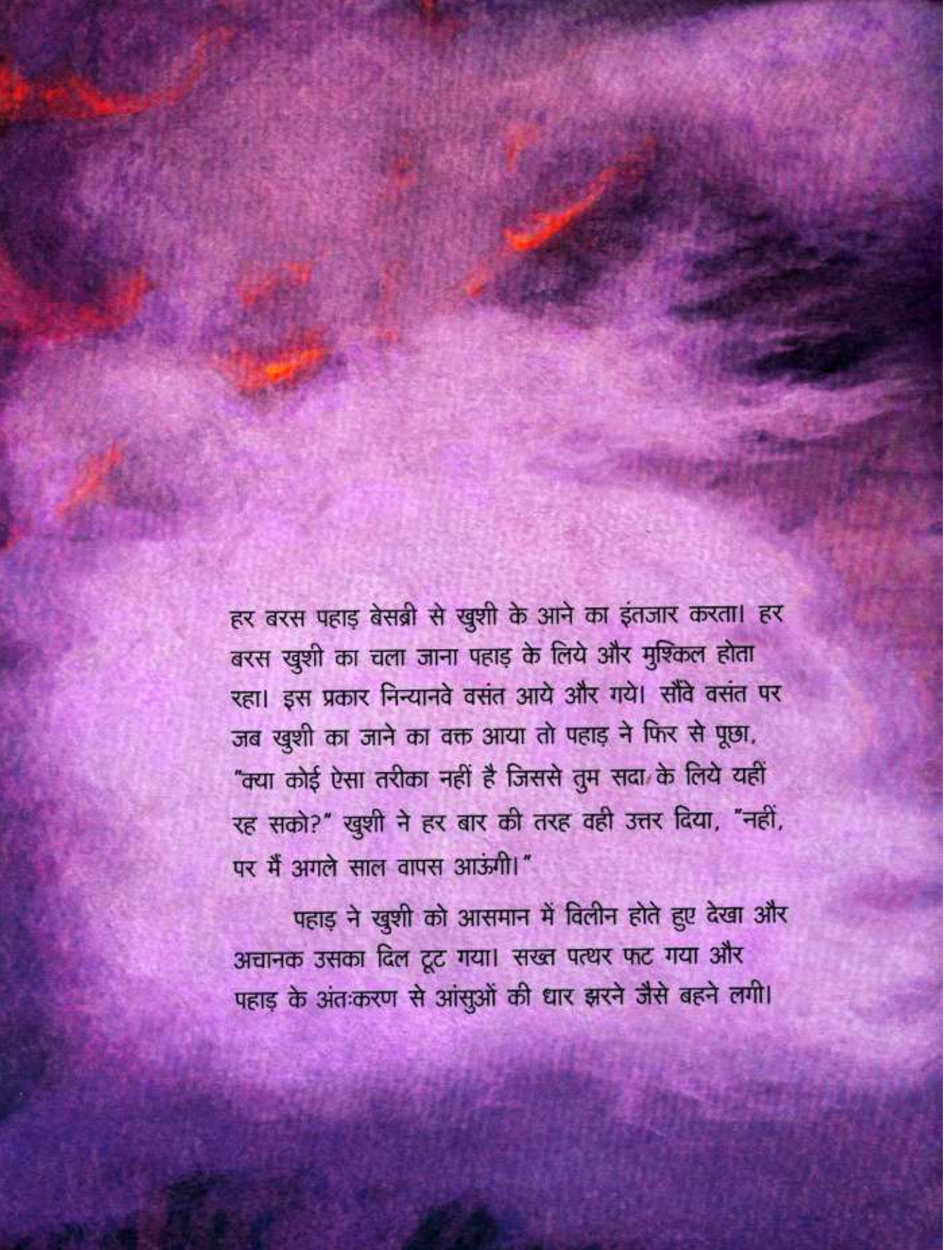
और वो उड़ गई। उसके पंख सूर्य की रोशनी में झिलमिला रहे थे। पहाड़ उसे लगातार टकटकी लगाये देखता रहा। फिर वो दूर, अंतहीन शून्य में विलीन हो गयी।

उसके बाद साल-दर-साल हर वसंत के मौसम में एक छोटी चिड़िया पहाड़ पर गीत गाती हुई आती, "मेरा नाम खुशी है और मैं तुम्हारा अभिनंदन करने आयी हूं।" कुछ घंटे वो पहाड़ के ऊपर उड़ती या उसकी एक चट्टान पर सुस्ताती और मधुर गीत गाती। चिड़िया के आने पर पहाड़ हर बार वही सवाल दोहराता, "क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है जिससे तुम सदा के लिये यहीं रह सको?"

हर बार खुशी उसके जवाब में कहती, "नहीं, पर मैं अगले साल वापस आऊंगी।"

हर बरस पहाड़ बेसब्री से खुशी के आने का इंतजार करता। हर बरस खुशी का चला जाना पहाड़ के लिये और मुश्किल होता रहा। इस प्रकार निन्यानवे वसंत आये और गये। सौंवे वसंत पर जब खुशी का जाने का वक्त आया तो पहाड़ ने फिर से पूछा, "क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है जिससे तुम सदा के लिये यहीं रह सको?" खुशी ने हर बार की तरह वही उत्तर दिया, "नहीं, पर मैं अगले साल वापस आऊंगी।"

पहाड़ ने खुशी को आसमान में विलीन होते हुए देखा और अचानक उसका दिल टूट गया। सख्त पत्थर फट गया और पहाड़ के अंतःकरण से आंसुओं की धार झरने जैसे बहने लगी।
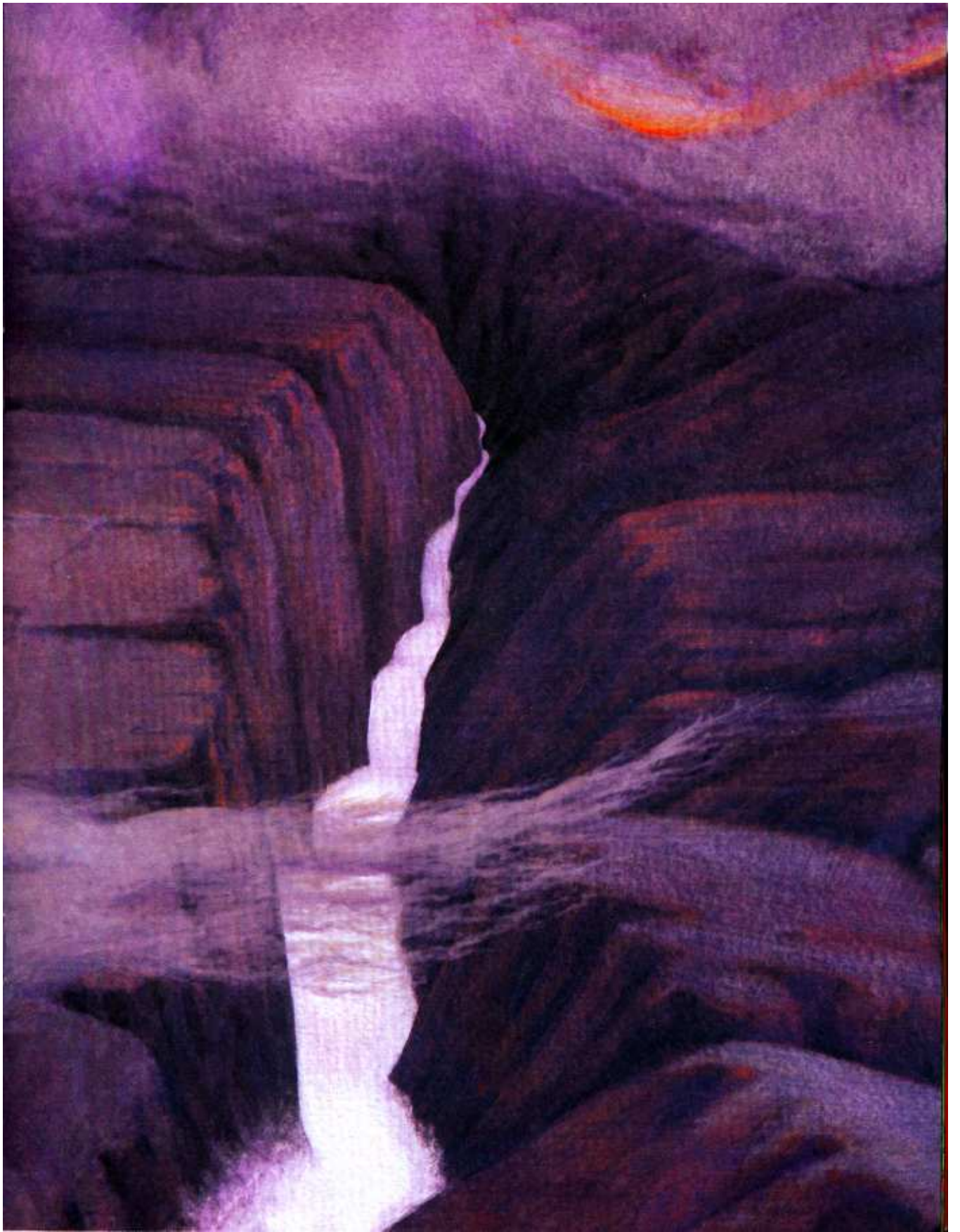
अगले वसंत एक नन्ही चिड़िया गीत गाते हुए आयी, "मैं खुशी हूं और तुम्हारा अभिनंदन करने आयी हूं।" इस बार पहाड़ ने कोई जवाब नहीं दिया। वो बस रोता रहा यह सोचकर कि चिड़िया जल्द ही चली जायेगी और फिर लंबे महीनों बाद ही वापस आयेगी। खुशी पहाड़ की एक चट्टान पर बैठ उसके बहते आंसुओं के सैलाब को देखती रही।
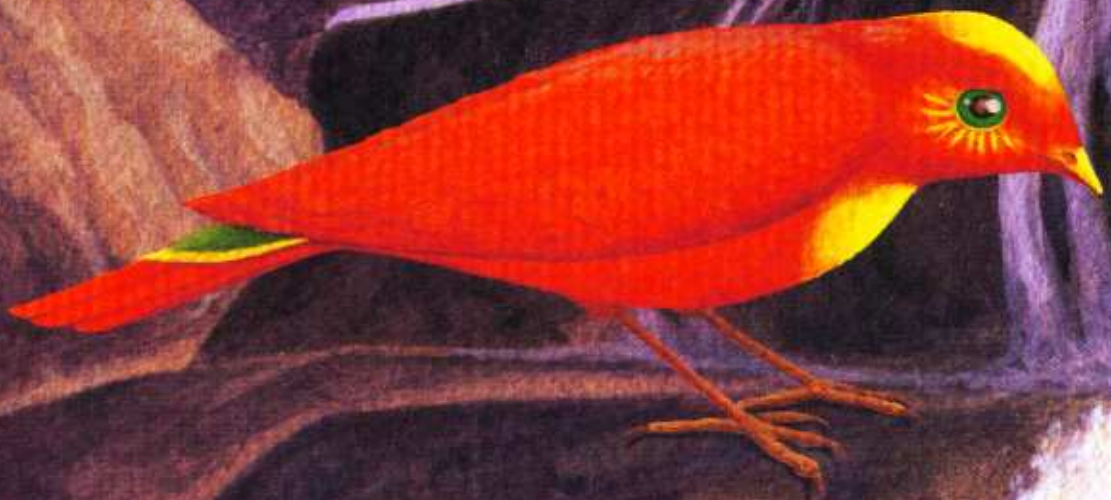
फिर वो पहाड़ के ऊपर उड़ी और हमेशा की तरह गीत गाने लगी। उसके जाते समय पहाड़ जार-जार आंसू बहा रहा था। "मैं अगले साल वापस आऊंगी," खुशी हल्के स्वर में कहकर उड़ गयी।
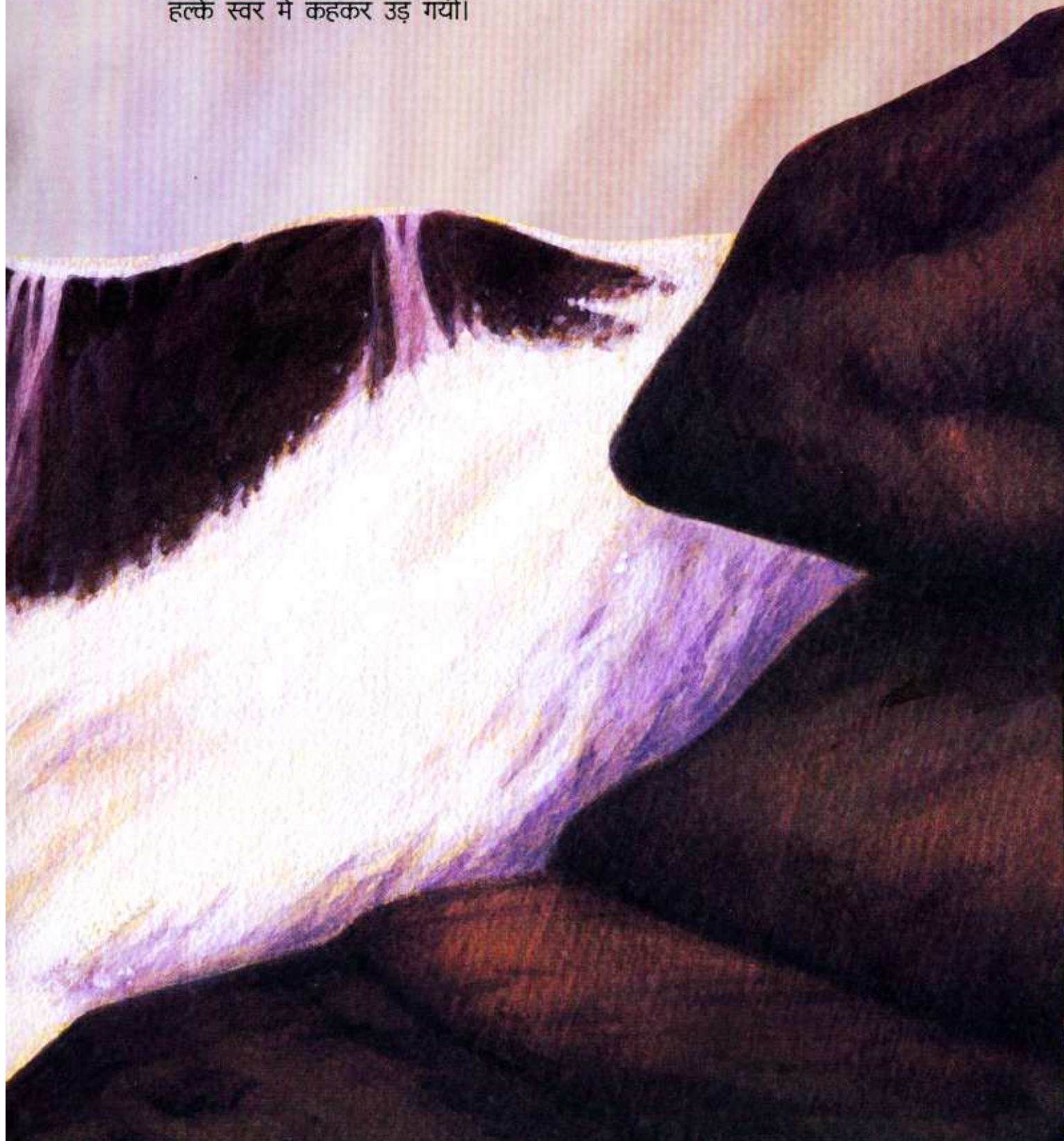
अगले वसंत जब खुशी लौटी तो उसकी चोंच में एक बीज था। पहाड़ अभी भी आंसुओं की धार बहा रहा था। खुशी ने झरने के पास एक चट्टान की झिरी में उस बीज को सावधानी से दबा दिया, जिससे कि बीज को नमी मिलती रहे। फिर खुशी पहाड़ के ऊपर उड़ी और उसे अपना मधुर गीत सुनाया। पहाड़ अपने दुख के कारण कुछ बोल नहीं पाया। यह देख खुशी एक बार फिर उड़ चली।

इस घटना के चंद हफ्तों बाद चट्टान की झिरी में छुपे बीज का कल्ला फूटा और उसने अपनी छोटी जड़ों को नीचे की ओर फैलाना शुरु किया। जड़ें नीचे की सख्त चट्टान तक पहुंचीं और पत्थर को तोड़ते धीरे-धीरे छोटी-छोटी झिरियों में फैलने लगीं। भीगे पत्थरों से जड़ों को पोषण-तत्व मिलने पर बीज में से एक नन्हे पौधे ने अपना सिर उठाया। पत्तों की हरी उंगलियां प्रकाश की ओर बढ़ने लगीं। पर पहाड़ अभी भी गहरे दुख में डूबा था। उसकी आंखें अभी भी आंसुओं से भरी थीं। छोटे से उस पौधे को वह देख नहीं पाया।
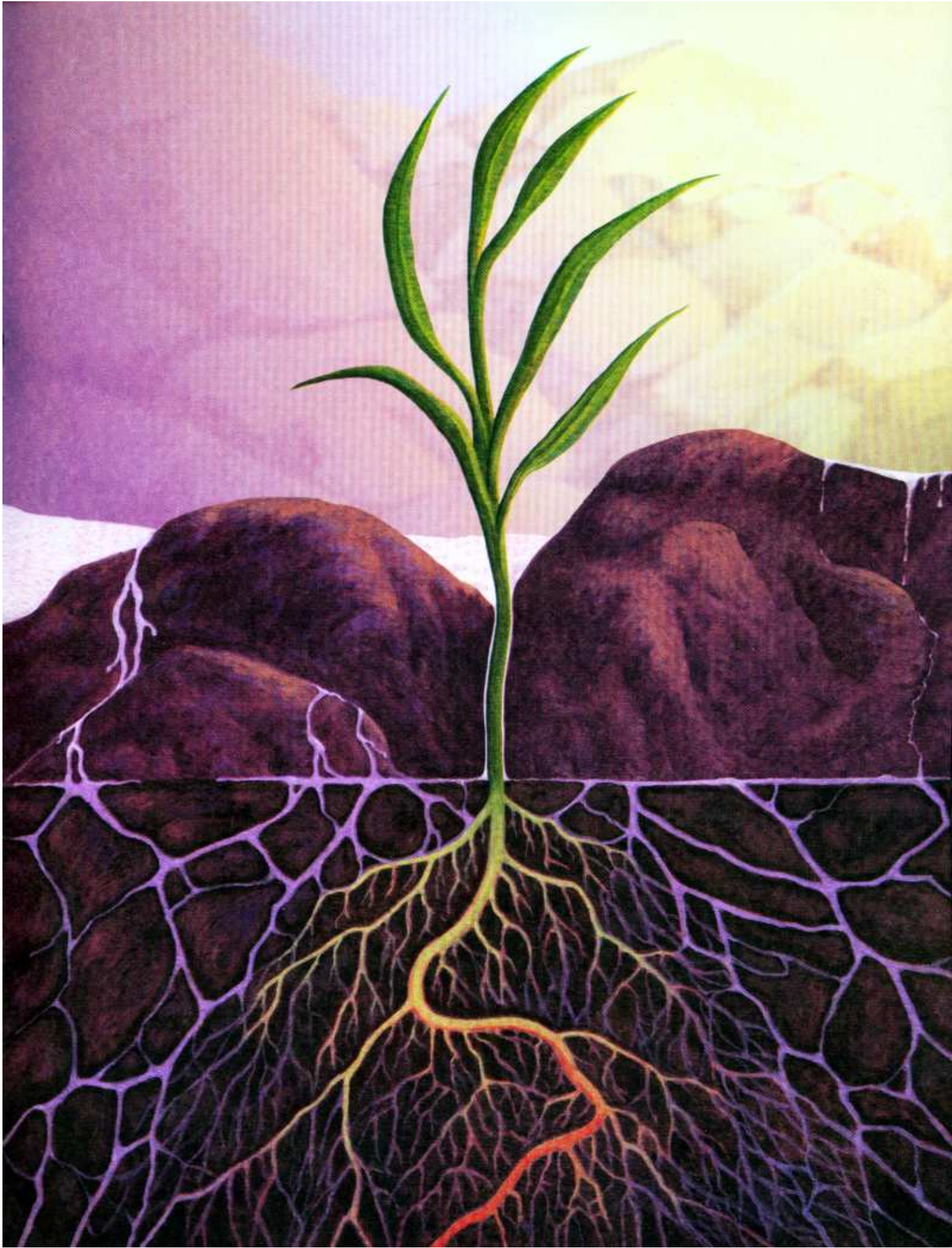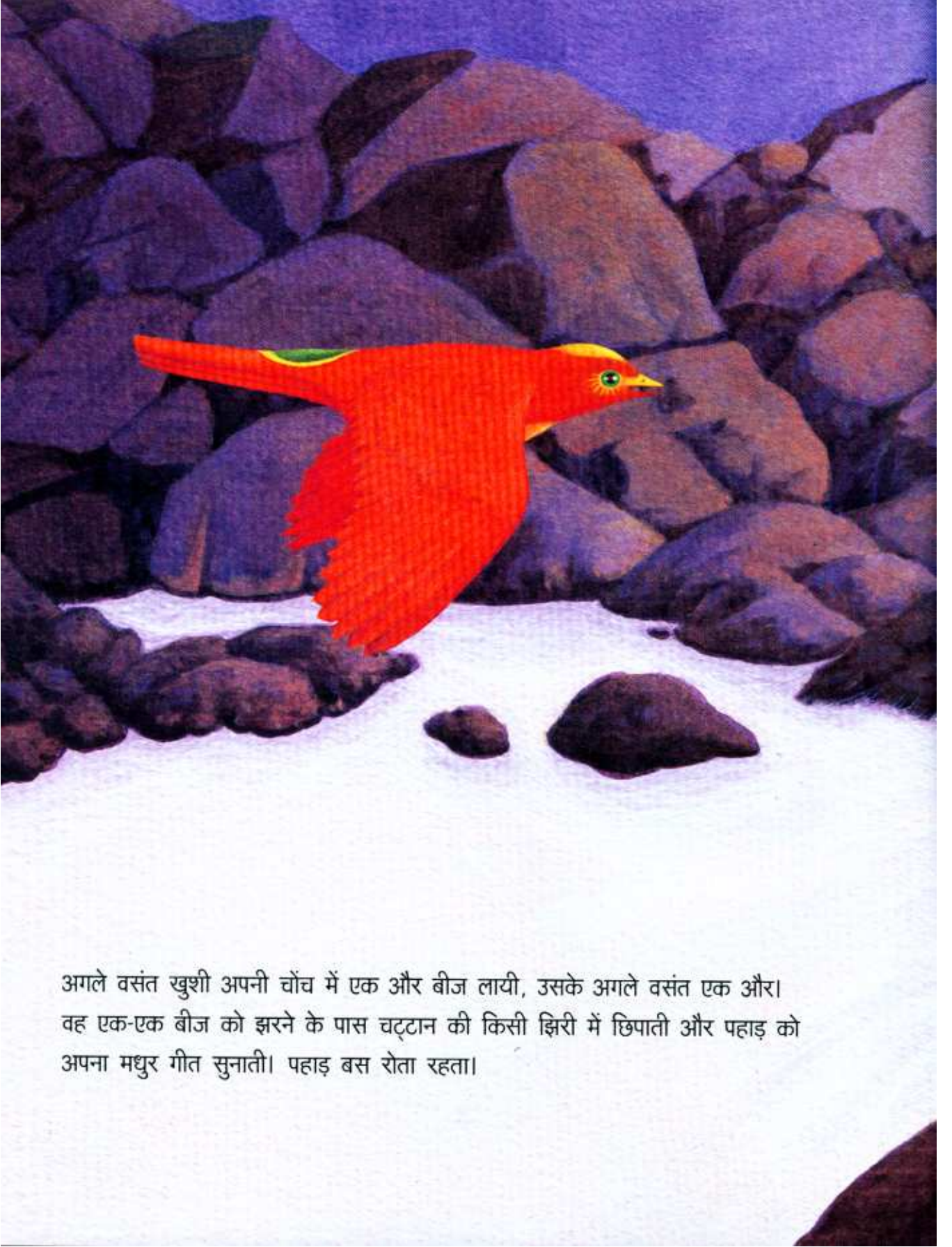
अगले वसंत खुशी अपनी चोंच में एक और बीज लायी, उसके अगले वसंत एक और। वह एक-एक बीज को झरने के पास चट्टान की किसी झिरी में छिपाती और पहाड़ को अपना मधुर गीत सुनाती। पहाड़ बस रोता रहता।
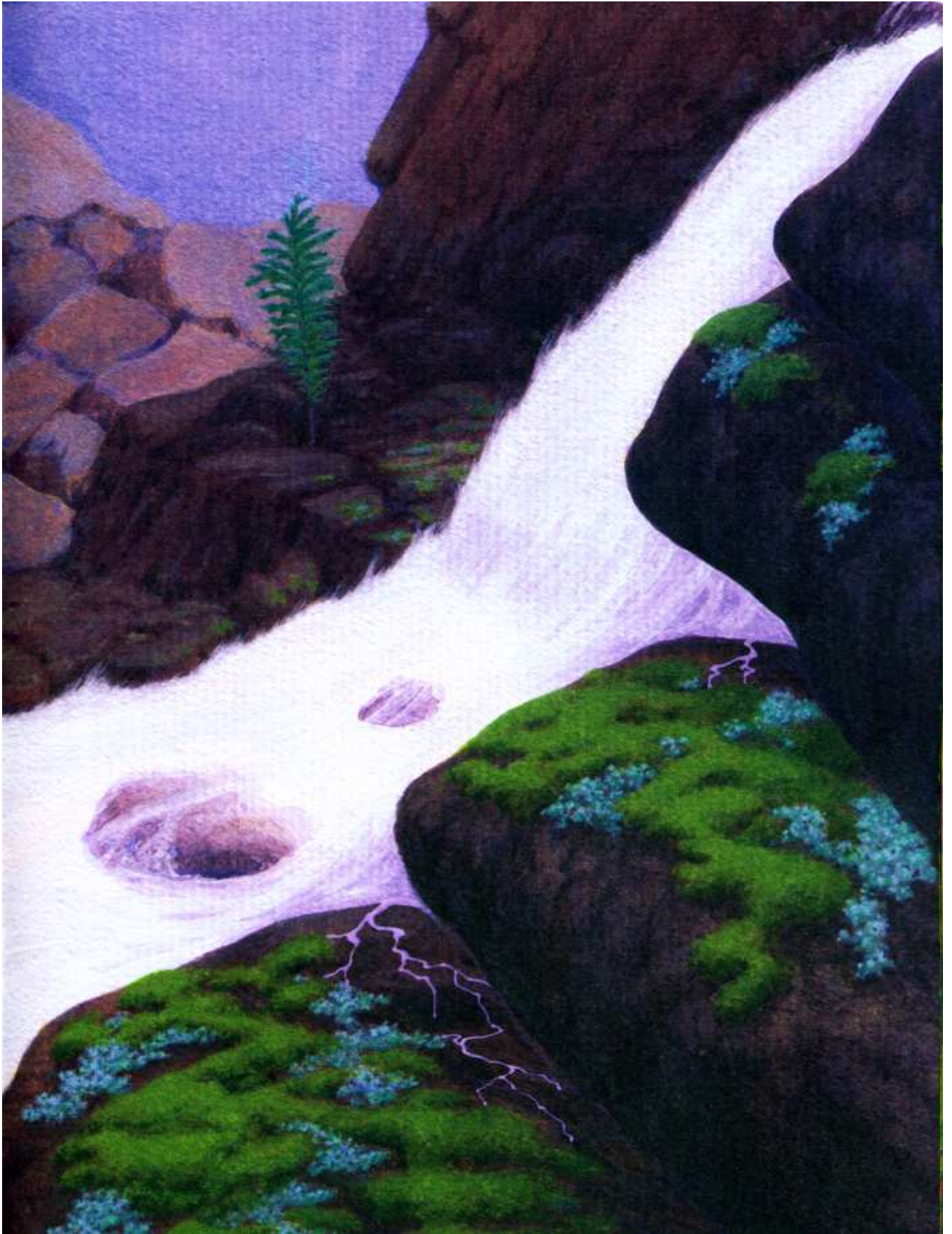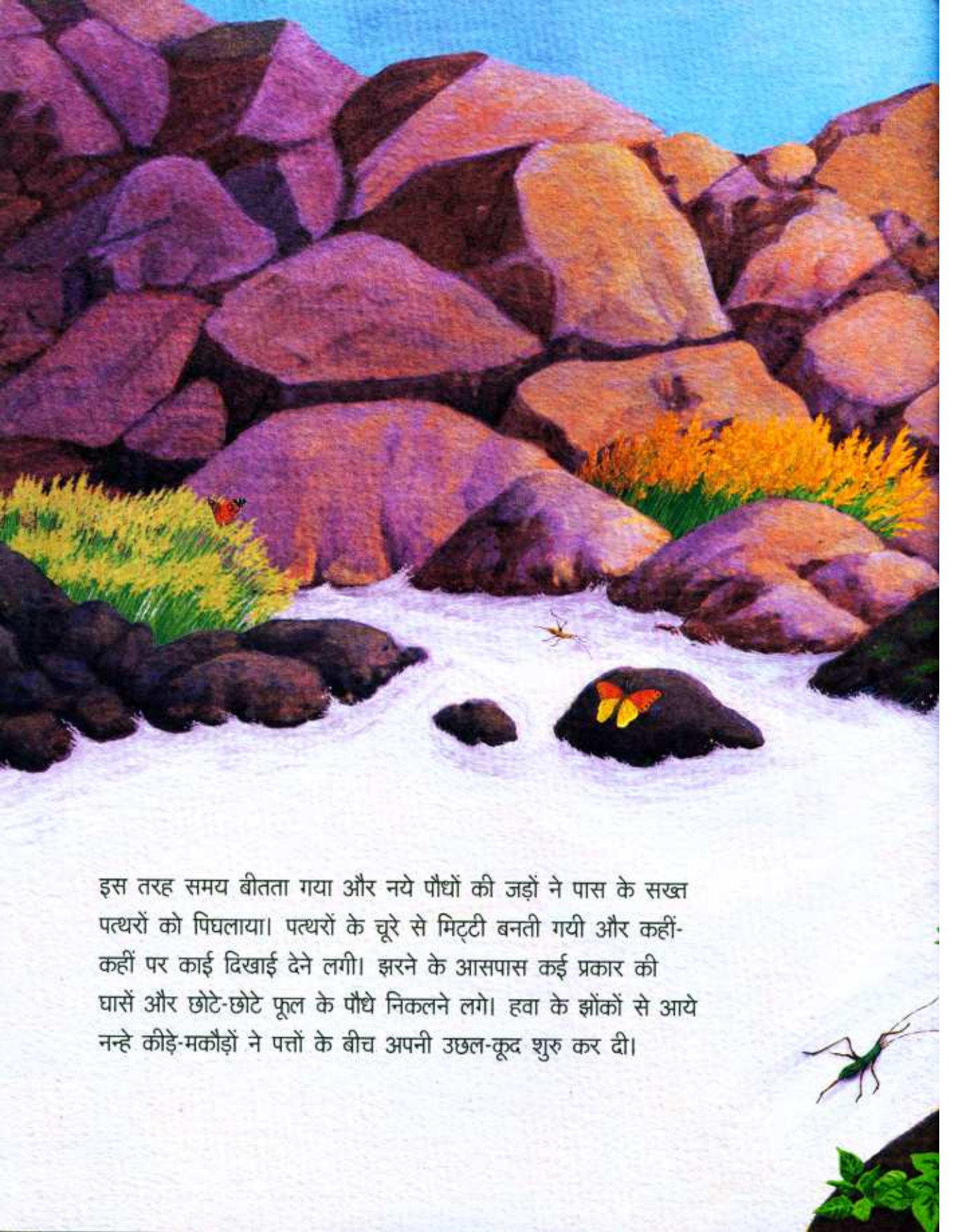
इस तरह समय बीतता गया और नये पौधों की जड़ों ने पास के सख्त पत्थरों को पिघलाया। पत्थरों के चूरे से मिट्टी बनती गयी और कहीं-कहीं पर काई दिखाई देने लगी। झरने के आसपास कई प्रकार की घासें और छोटे-छोटे फूल के पौधे निकलने लगे। हवा के झोंकों से आये नन्हे कीड़े-मकौड़ों ने पत्तों के बीच अपनी उछल-कूद शुरु कर दी।
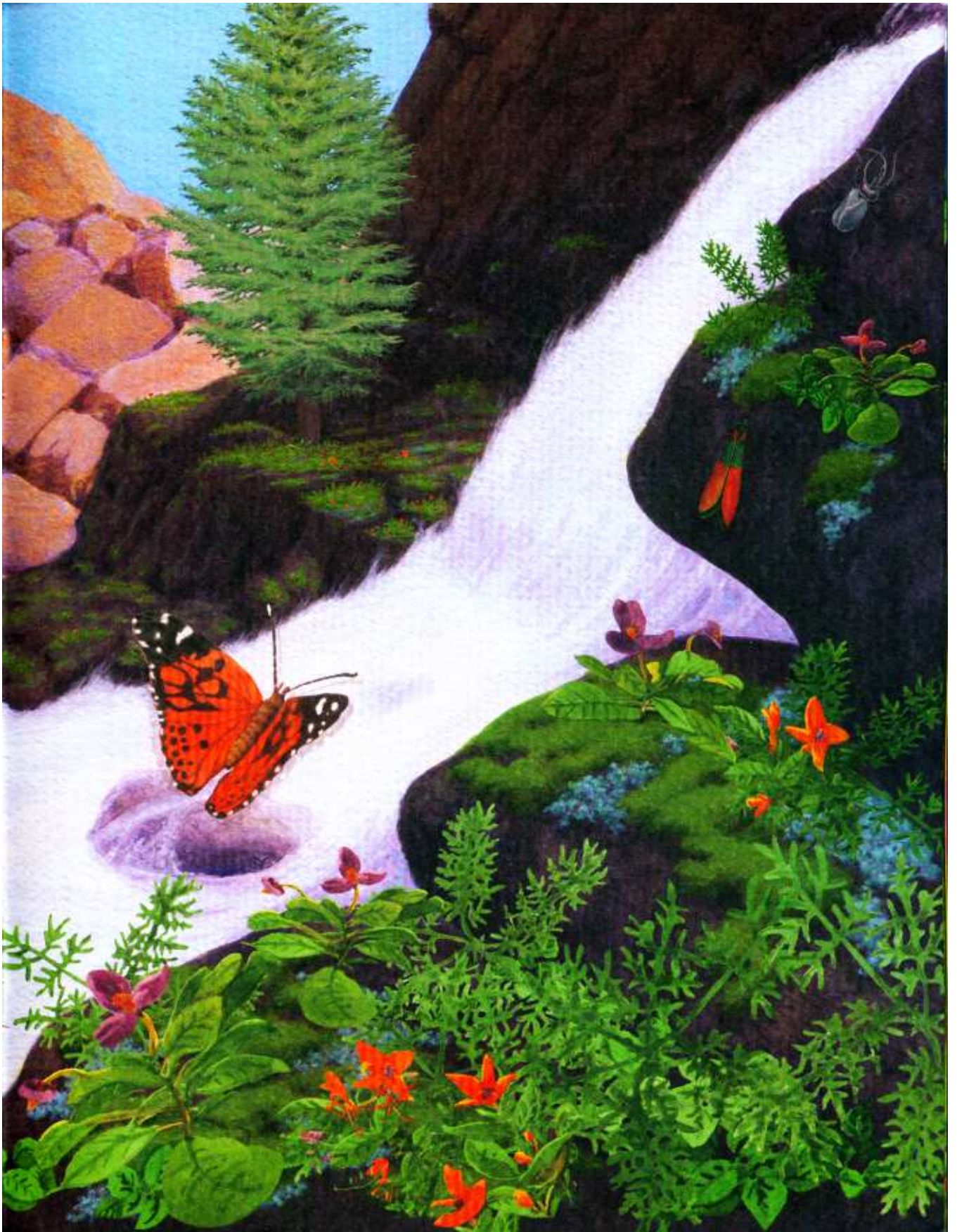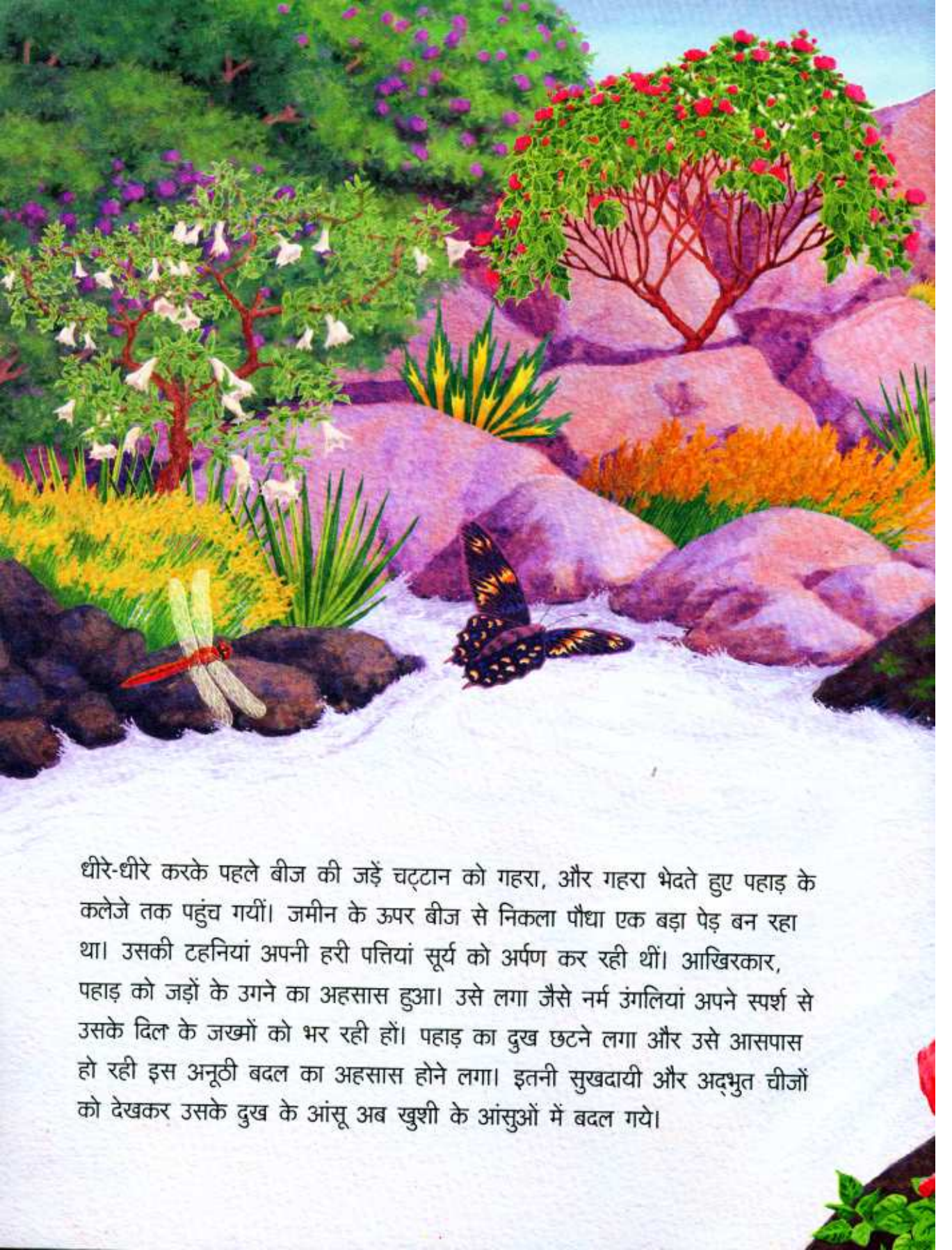
धीरे-धीरे करके पहले बीज की जड़ें चट्टान को गहरा, और गहरा भेदते हुए पहाड़ के कलेजे तक पहुंच गयीं। जमीन के ऊपर बीज से निकला पौधा एक बड़ा पेड़ बन रहा था। उसकी टहनियां अपनी हरी पत्तियां सूर्य को अर्पण कर रही थीं। आखिरकार, पहाड़ को जड़ों के उगने का अहसास हुआ। उसे लगा जैसे नर्म उंगलियां अपने स्पर्श से उसके दिल के जख्मों को भर रही हों। पहाड़ का दुख छटने लगा और उसे आसपास हो रही इस अनूठी बदल का अहसास होने लगा। इतनी सुखदायी और अद्भुत चीजों को देखकर उसके दुख के आंसू अब खुशी के आंसुओं में बदल गये।
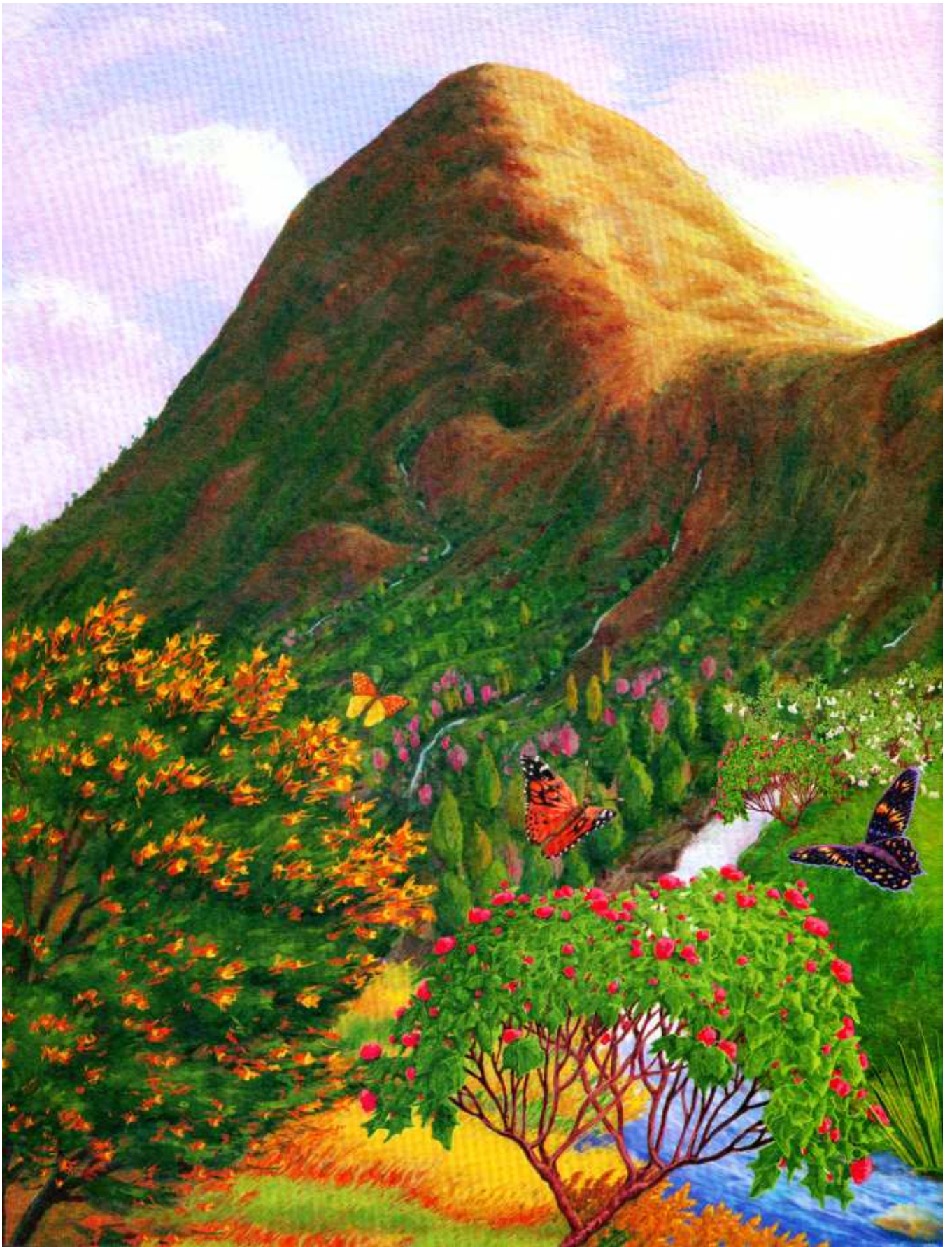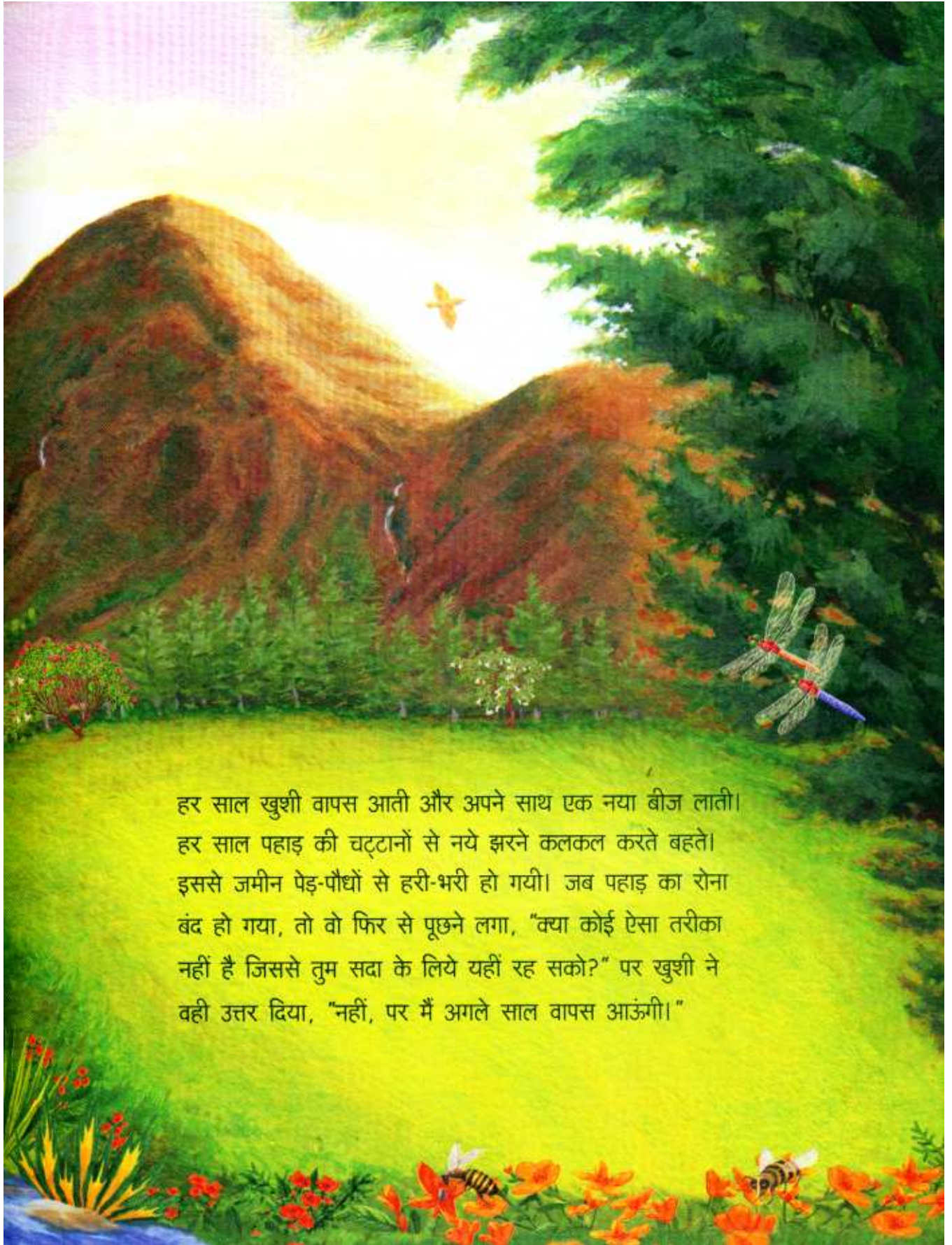
हर साल खुशी वापस आती और अपने साथ एक नया बीज लाती। हर साल पहाड़ की चट्टानों से नये झरने कलकल करते बहते। इससे जमीन पेड़-पौधों से हरी-भरी हो गयी। जब पहाड़ का रोना बंद हो गया, तो वो फिर से पूछने लगा, "क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है जिससे तुम सदा के लिये यहीं रह सको?" पर खुशी ने वही उत्तर दिया, "नहीं, पर मैं अगले साल वापस आऊंगी।"

साल बीतते गये। झरनों के पानी ने पहाड़ के आसपास के समतल इलाके को भी उर्वर और उपजाऊ बनाया। वहां अब चारों ओर, दूर-दूर तक बस हरियाली नजर आ रही थी। अब वहां दूर-दूर से जानवर आने लगे।

अपनी वादियों में और ढलानों पर जानवरों को घर बनाते हुए देख पहाड़ के दिल में अचानक नई उम्मीद जगी। पेड़ों के जड़ों की मजबूती के लिये पहाड़ ने अपना दिल खोलकर उनको अपनी सारी शक्ति दी। अब पेड़ों के तने सूर्य के और पास जाने की कोशिश करने लगे और पहाड़ के दिल से आशा का गीत हरेक शाखा के सिरे तक पहुंचने लगा।
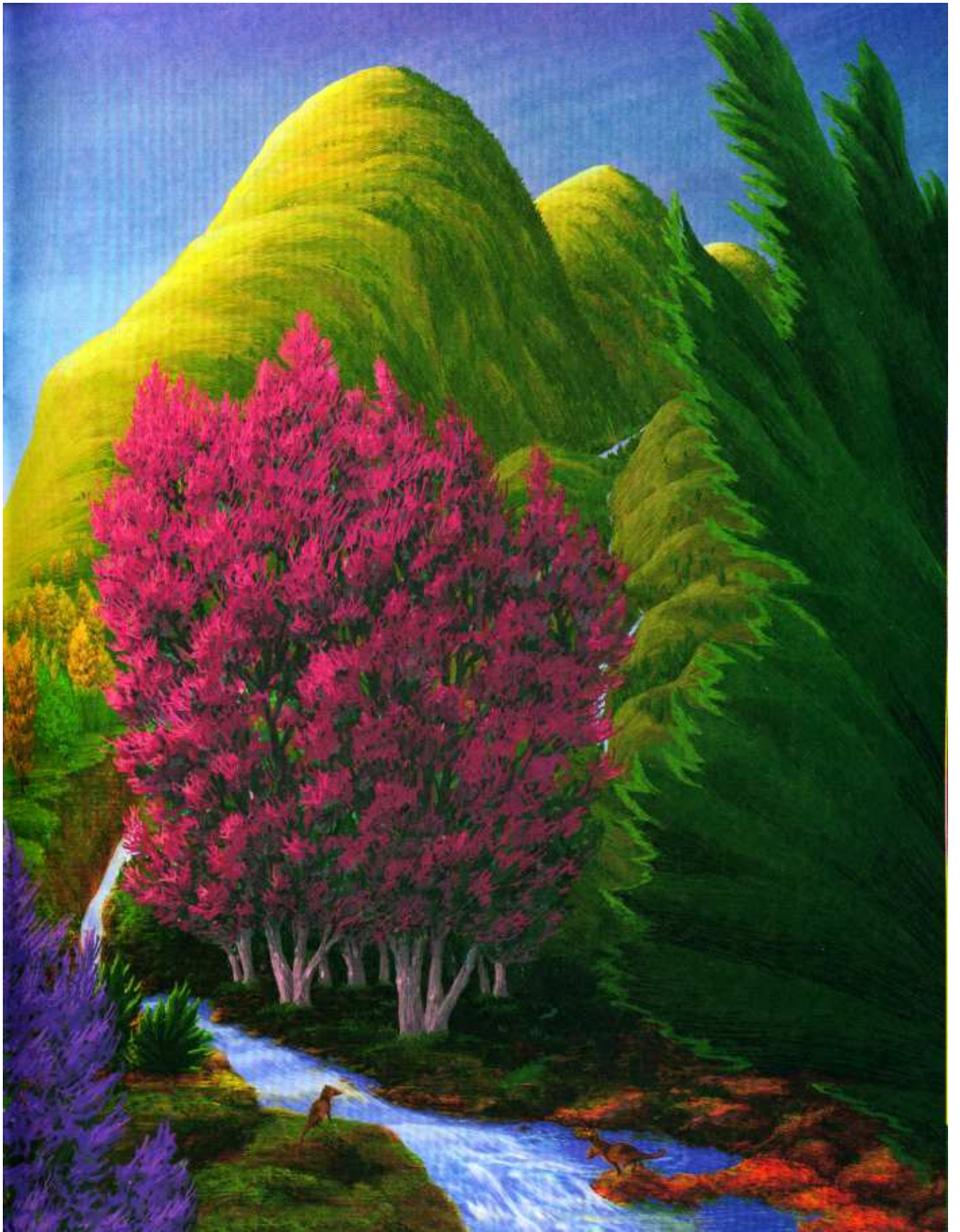
अगले वसंत जब खुशी आयी तो उसकी चोंच में बीज नहीं बल्कि एक छोटी-सी टहनी थी। वो सीधे सबसे ऊंचे पेड़ तक उड़ी, वही पेड़ जो सबसे पहले बीज से पनपना था। उसने टहनी को एक डाल पर रखा। वो वहीं पर अपना घोंसला बनाने वाली थी।

"मैं खुशी हूं," उसने गाया, "और मैं यहां रहने आयी हूं।"
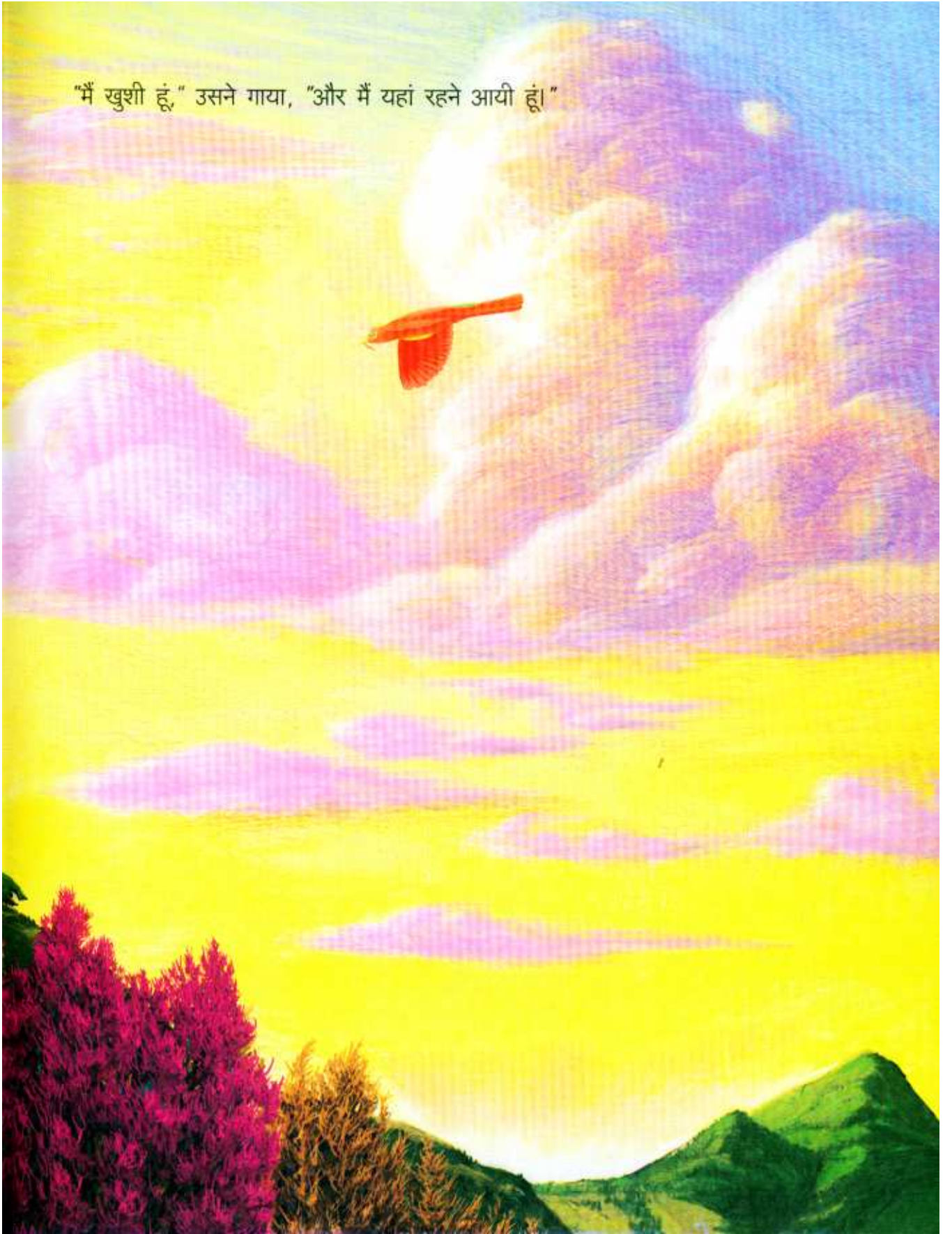
बहुत पुरानी बात है। एक पहाड़ था — एकदम पथरीला... यह शुरुआत है पहाड़, जिसे एक चिड़िया से प्यार हुआ **नामक कहानी की। पहाड़ न जाने कब से ठंडा, अकेला और उदास खड़ा था। फिर एक दिन एक नन्ही चिड़िया आती है और पहाड़ की जिंदगी ही बदल डालती है।**

एलिस मकलेरन की इस अनूठी कहानी का दुनिया भर के बच्चों ने मजा लूटा है। कहानी को हजारों बार पढ़ा और सुनाया गया है और उस पर अनेकों नाटक बने हैं। गहरे मानवीय मूलों पर आधारित यह कहानी भाषाओं और संस्कृतियों की सीमाओं को तोड़ती है। 1985 में यह कहानी पहली बार छपी। तब से एरिक कार्ल के मूल चित्रों के साथ यह कई भाषाओं में छप चुकी है। 1989 में यह कहानी रूसी भाषा में नये चित्रों के साथ छपी। 2003 में इनका उर्दू संस्करण छपा, जिसमें एक पाकिस्तानी चित्रकार ने चित्र बनाये।

तूलिका का संस्करण स्टीफन एट्कन के अत्यंत सुंदर और अभूतपूर्व चित्रों के साथ छापा जा रहा है। लेखिका चाहती हैं कि भविष्य में जहां भी उनकी यह पुस्तक छपे, इन्हीं चित्रों के साथ छपे।

एलिस मकलेरन 1984 से लिख रही हैं। वे अपने भौतिकशास्त्री पति के साथ दुनिया भर घूमती हैं और साथ-साथ अपनी किताबों पर भी काम करती हैं। उनकी जानी-मानी पुस्तकों में *रॉक्सबॉक्सन*, *द घोस्ट डांस*, *द इयर ऑफ द रैंच*, और *ड्रीमसौंग* हैं। वे अमरीका में रहती हैं।

स्टीफन एट्कन मूलतः कैनाडा निवासी हैं। लेखक और चित्रकार होने के साथ-साथ वे एक जीववैज्ञानिक भी हैं और *बायोडायवर्सिटी जर्नल* के संपादक हैं। वे कुलु, हिमाचल प्रदेश, में रहते हैं। इस पुस्तक के रंग-बिरंगे चित्र, हिमालय के ऊपर आकाश के मनमोहक रंगों को प्रतिबिंबित करते हैं।

अरविन्द गुप्ता बच्चों के लिये वैज्ञानिक खिलौने बनाते हैं। उन्होंने हिंदी में लगभग सौ पुस्तकों का अनुवाद किया है। वे पुणे स्थित एक बाल विज्ञान केंद्र में काम करते हैं।

ISBN 81-8146-077-4
Hindi
Read alone age 8+
Read aloud to age 4+
Rs 100 only